RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-07
July-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i07.023

दक्षिण चीन सागर एवं हिन्द महासागर के सदंर्भ में भारत–चीन समुद्री कूटनीति का बदलता स्वरूप

[1]Dr. Shyam Mohan Agrawal and [2]Dr. Sanjay Kumar Sharma

[1]*Associate Professor, Department of Political Science, University of Rajasthan*
[2]*Post-Doctoral Fellow, Political Science, ICSSR, DELHI*

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 July 2020

Keywords
जलडमरूमध्य, आधुनिकीकरण, शिन्हुआ, शांगरी ला वार्ता, नाइन डैश लाइन, वाणिज्यिक, कम्युनिस्ट पार्टी

***Corresponding Author**
Email: sanjayyy0786[at]gmail.com

ABSTRACT

दक्षिणी चीन सागर में चीन का जोखिम महत्त्वपूर्ण है। चीन, ताईवान, वियतनाम, मलेशिया, बुनेई और फिलीपीन्स के दक्षिण चीन सागर में राज्यक्षेत्रीय और क्षेत्राधिकार के दावें है। खासतौर से क्षेत्र में संभावित गैस और तेल के दोहन के लिए। इस क्षेत्र में जहाजों की स्वतंत्र आवाजाही भी एक मुद्दा है। खासतौर से अमेरिका और चीन के बीच, चीन के 200 मील विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र में अमेरिकी सैन्य जहाजों के संचालन को लेकर है। न केवल दोनों देशों के मध्य तनाव बढ़ रहा है, बल्कि तनाव को हवा भी दी जा रही है। हिंद महासागर पर प्रभुत्व बढ़ाने हेतु चीन ने भारत के चारों ओर एक चक्रव्यूह बना रखा है, जिसमें चीन पाकिस्तान को एक कड़ी के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। हिन्द महासागर तक पहुँच बनाने के लिए चीन पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह को आधुनिक तकनीकी द्वारा सी पोर्ट के रूप में विकसित कर चुका है।

दक्षिण चीन सागर है जो प्रशांत महासागर का एक हिस्सा है। यह करीमता और मलक्का जलडमरूमध्य से लेकर ताईवान जलडमरूमध्य तक करीब 3,50,00,000 वर्ग किमी (1,400,00 वर्ग मील) में फैला हुआ है। इस क्षेत्र का महत्व इतना है कि दुनिया के एक तिहाई जहाजों के आवाजाही का मार्ग यही हैं। यह भी माना जाता है कि इसके जल के अंदर विशाल मात्रा में तेल और गैस का भंडारण है। दक्षिणी चीन सागर में सैकण्ड़ों की संख्या में द्वीप समूह है। समुद्र और तमाम गैर आबादी वाले द्वीप समूहों पर तमाम देश अपनी संप्रभुता का दावा कर रहे है।[1]

चीन ने अपने अर्द्ध सैनिक बलों को आधुनिक बनाने पर जोर देने के अलावा नौसेना के आधुनिकीकरण पर पूरी तरह से ध्यान देना शुरू कर दिया है। उसकी नौसेना क्षमता तेजी से बढ़ रही है। उसका तर्क है कि उसकी संप्रभुता और अधिकार क्षेत्र की रक्षा के लिए सैन्य शक्ति बढ़ाना जरूरी है। इस तरह वह पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में अमेरिकी नौसेना की पहुंच रोकने के लिए अपनी नौसेना की शक्ति बढ़ाने का तर्क दे रहा है।

दक्षिण चीन सागर में अपनी संप्रभुता का बीजिंग लगातार दावा कर रहा है। मार्च 2011 में 11वें राष्ट्रीय जन महासम्मेलन के बाद शिन्हुआ समाचार एजेंसी के मुताबिक चीन का समुद्री संसाधन 30 लाख वर्ग किमी के अपतटीय क्षेत्र में फैला हुआ है। यह भी कहा गया कि इन संसाधनों में 24.6 बिलियन टन तेल भंडारण और 1.6 बिलियन क्यूबिक मीटर प्राकृतिक गैस भी शामिल है। यह बयान चीन के संप्रभुता के दावे का महत्वपूर्ण हिस्सा था। चीन के एक नौसेना एडमिरल ने सिंगापुर में **शांगरी ला वार्ता** के दौरान टिप्पणी करते हुए कहा कि **''इस क्षेत्र का दक्षिणी चीन सागर के नाम से जानते हैं, अतः यह चीन का सागर है।''**[2]

जनवरी 2013 में फिलीपीन्स ने चीन के नाइन डैश लाइन में राज्यक्षेत्रीय अधिकार के दावे के खिलाफ औपचारिक रूप से मध्यस्था की कार्यवाही की शुरूआत की। इसमें स्प्रैटली द्वीप भी शामिल था। जिसमें कहा गया था यूनाइटेड नेशन्स कन्वेंशन आन दि लॉ सी कन्वेन्शन के तहत चीन का यह दावा गैर कानूनी है। यह मुकदमा पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चीन के खिलाफ दक्षिणी चीन सागर के मुद्दे को लेकर था, जिसमें इस कन्वेंशन के तहत चीन ने दक्षिण चीन सागर में नाइन डैश लाइन का दावा किया था। 19 फरवरी, 2013 को चीन के अधिकारियों ने मध्यस्थता में हिस्सा लेने से इन्कार कर दिया, क्योंकि चीन का कहना था कि यह मामला उसकी संप्रभुता से जुड़ा हुआ है। इसलिए इस मामले की सुनवाई गठित मध्यस्थता न्यायाधिकरण को सुनवाई का कोई अधिकार नहीं है। 29 अक्टूबर, 2015 को मध्यस्थता न्यायाधिकरण ने कहा कि इस मामले में उसे सुनवाई का अधिकार है। कोर्ट ने फिलीपीन्स द्वारा प्रस्तुत 15 दावों में से सात को सुनवाई के लिए स्वीकार किया गया।

12 जुलाई, 2016 की स्थायी मध्यस्थता न्यायाधिकरण ने अपना फैसला प्रकाशित किया, जिसे अंतिम और बाध्यकारी बताया और यह भी कहा गया कि यह कन्वेंशस द्वारा निर्धारित है। परन्तु चीन ने इस फैसले को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया। अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर चीन के इस कदम की कड़ी आलोचना हुई।

स्थायी मध्यस्थता न्यायाधिकरण के फैसले को चीन ने मानने से इन्कार कर दिया। उसका दावा दक्षिणी चीन सागर के 80 प्रतिशत हिस्से पर बरकरार है। जबकि इस फैसले का

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नई दिल्ली ने ज्यादा संतुष्टि और उल्लास के साथ स्वागत किया है। यह पहली बार हुआ जब चीन के ऐतिहासिक दावे का अवैधानिक घोषित कर दिया। इस फैसले से चीन के साथ राज्यक्षेत्रीय विवाद वाले देशों बहुत राहत मिली। भारत, जापान, अमेरिका और आशियान देशो के बीच संबंधों को नया रूप मिलने के अलावा अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में फर्क नजर आने लगा है। बीजिंग पर सफलतापूर्वक प्रतिबंध के बाद भारत के लिए परमाणु आपूर्ति समूह में प्रदेश का रास्ता पहले की अपेक्षा सहज हो गया है।[3]

चीन के खिलाफ कन्वेंशन का फैसला आने के बाद भारत सरकार के अधिकारियों खासतौर से विदेश मंत्रालय ने बयान जारी करते हुए कहा कि सभी पक्षकारों को फैसले का सम्मान करना चाहिए। इस बात पर जोर देते हुए कहा गया था कि भारत जहाजों और हवाई उड़ानों के बाधारहित होने का समर्थन करता है। अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धान्त के आधार पर बेरोकटोक वाणिज्यिक गतिविधियाँ जारी रहे। विदेश मंत्रालय का यह बयान चीन को झिड़की देने वाला है। जो यह बताने के लिए पर्याप्त है कि इस मुद्दे से भारत का विशिष्ट राष्ट्रीय हित जुड़ा है। बयान में यह भी कहा गया है कि राष्ट्रों को इन मुद्दों से निपटारा बिना कोई धमकी या बल प्रयोग के आधार पर शांतिपूर्ण ढंग से करना चाहिए। साथ ही आचारण में आत्म नियंत्रण होना चाहिए, जिससे शांति और स्थिरता को प्रभावित करने वाले विवादों को दूर किया जा सकता है।

जब से भारतीय कंपनी ओएनजीसी ने वियतनाम के दक्षिणी चीन सागर के क्षेत्रिय समुद्र में दो ब्लॉकों में तेल अन्वेषण शुरू किया है, चीन ने इस क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिशें तेज कर दी हैं। 2010 से चीन, अपनी समुद्री ताकत प्रदर्शित कर रहा है, जिसके चलते जापान, वियतनाम, फिलिपिंस और अमेरिका के साथ उसके संबंधों में तनाव पैदा हो गया है। वैसे चीन इसे अपने समुद्री पिछवाड़े में **'अमेरिकी दखल'** मानता है। दक्षिणी चीन सागर झगड़े का कारण बन गया है, क्योंकि चीन और वियतनाम के अलावा फिलीपींस, ब्रूनेई सहित दस और देश इस विवादित समुद्री इलाके और इसके द्वीपों पर अपना नियंत्रण बनाना चाहते है। यह क्षेत्र मलक्का खाड़ी से लेकर ताइवान खाड़ी तक 35,00,000 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। विवाद का होना स्वाभाविक है, क्योंकि इसमें कच्चे तेल का 50 अरब टन से भी अधिक सुरक्षित भंडार और 200 खरब घनमीटर प्राकृतिक गैस मौजूद है। इस सागर क्षेत्र में बहुत बड़ी मात्रा में मछलियाँ भी मौजूद है। भारत और वियतनाम का संयुक्त अन्वेषण कोई नई बात नहीं है। फुदान विश्वविद्यालय के अमेरिकी अध्ययन केन्द्र के **प्रोफेसर वू झिन्बाओं** मानते है **''भारत का पूर्वाभिमुख रुख बढ़ रहा है।''**[4] और दक्षिण एशियाई देश होने के नाते भारत को पूर्वी एशियाई मुद्दों में शामिल होने का पूरा–पूरा हक है। अमेरिका भी चाहता है कि इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को नकारा करने के लिए एशियाई देश एकजुट हो। वे कहते है **''अमेरिका, चीन के विरोध का कोई मौका नहीं छोड़ता और जापान तथा दूसरे क्षेत्रीय देशों के साथ उसके संयुक्त सैन्य अभ्यासों में इन सालों में तेजी आई है।''**[5] तेल अन्वेषण की इस परियोजना से भारत एक तीर से दो शिकार कर सकेगा। इससे भारत को आर्थिक फायदा तो होगा ही, वह चीन पर राजनीतिक रूप से बढ़त भी पा सकेगा।

ओएनजीसी विदेश लि. दक्षिण चीन सागर में 127 और 128 ब्लॉकों में तेल का अन्वेषण कर रही है **(वियतनाम इन दो ब्लॉकों को अपने विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र में मानता है।)** चीन इस पर आपत्ति उठाते हुए कहता है कि उसे दक्षिण चीन सागर और उसके द्वीपों पर **'निर्विवाद प्रभुत्व'** प्राप्त है। भारत का सीधा हवाला दिए बिना चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता **जियांग यू** कहती है, **''चीन के प्रभाव क्षेत्र में समुद्र में हम किसी भी देश द्वारा तेल और गैस अन्वेषण और विकास के हमेशा खिलाफ रहे हैं। हम आशा करते हैं, दूसरे देश इस विवाद से दूर रहेंगे।''** उधर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र ग्लोबल टाइम्स ने तो भारत को चेतावनी देते हुए **''गंभीर राजनीतिक उकसावे से बाज आने'' को कहा है कि कहीं ''चीन का सब्र का प्याला न छलक जाए।''**[6]

चूँकि ताइवान, दक्षिण और पूर्वी चीन सागरों को विभाजित करता है, इसलिए चीन इन दो सागरों को चीन के **'महत्वपूर्ण हित'** मानता है और अपनी स्थिति मजबूत कर रहा है, जिसे वह कम्युनिस्ट शासन के अधीन 1949 के बाद चीन का वैधानिक पुनर्गठन मानता है। लेकिन अंतरर्राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय अधिकारों को घोषित करना और उन्हें लागू करना, दो अलग–अलग बातें है। अमेरिका जैसे ताकतवर देश और जापान जैसी मजबूत अर्थव्यवस्थाओं को चीन नहीं धमका सकता।

पिछले साल ही चीन ने दक्षिण चीन सागर संबंधी मुद्दों को 'महत्वपूर्ण हित' घोषित करते हुए इन्हें तिब्बत, झिनजियांग और ताईवान के समकक्ष बताया था। इस 'यू' आकार के समुद्री क्षेत्र पर इस चीनी दावें में 17 लाख वर्ग किलोमीटर इलाका आता है। सभी क्षेत्रीय देश, अपने दावों के समर्थन में 1982 की संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि का हवाला देते है। इस कानून में इलाके पर कब्जे के निरंतर और कारगर कब्जे का होना जरूरी है। कानूनी दृष्टि से इनमें से कई दावें समर्थनीय नहीं हो सकते। विवादित दावेदारों द्वारा नौसैनिक जहाजों में अक्सर टकराव की खबर दी जाती है। इन दिनों चीन और वियतनाम अपने दावों को लेकर अधिक मुखर हुए है।

2002 में चीन और आसियान देशों ने विवाद से उत्पन्न तनावों को दूर करने के लिए **'दक्षिण एशिया सागर में पक्षों के आचरण की घोषणा'** (डीओसी) पर सहमति जताई थी। दोनों पक्ष, विश्वास बहाली उपायों और उन्हें लागू करने पर चर्चा करने पर भी राजी हो गए थे। अब चीन इस मुद्दे को अलग–अलग देशों के साथ आपसी बातचीत से निपटाना

RRIJM 2015, All Rights Reserved

चाहता है, जबकि आसियान देश चीन के साथ सामूहिक रूप से बातचीत करना चाहते है। नौ साल बाद भी चीन और आसियान, डीओसी और विश्वास बहाली उपायों को लागू नहीं कर पाए हैं। अब 2007 से हमेशा की तरह चीन, सर्वे जहाजों के केवल काट देने, बिना कब्जे वाली समुद्री चट्टानों पर मार्कर लगाने और विदेशी नौवहन नावों को परेशान करने का आक्रामक रवैया अपनाए हुए है।

चीन अच्छी तरह जानता है कि वह आसियान देशों के समर्थन से अमेरिकी ताकत का मुकाबला नहीं कर पाएगा और इसलिए वह जापान के साथ मतभेदों को दूर करने की कोशिश कर रहा है। वह सेनकाकू द्वीपसमूह के आस–पास के सागर और तलहटी में इस शर्त पर संयुक्त रूप से तेल और गैस के अन्वेषण के लिए तैयार है कि **'इस द्वीप समूह पर चीन के पूर्ण प्रभुत्व को स्वीकार करे।'**[7] चीन हमेशा से कहता आया है कि जापान द्वारा प्रशासित सेनकाकू द्वीपसमूह उसका है।

चीन, व्यापार, निवेश और रोजगार उपलब्ध कराके फिलीपींस को खुश करने की कोशिश भी कर रहा हैं वियतनाम को भी वह यही सुविधाएँ दे रहा है और वियतनामी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ अपने राजनीतिक भाईचारे को भी भुनाने की कोशिश कर रहा है।

इस सबके बावजूद मई और जून में उसके संबंध काफी खराब हो गए, जब चीन ने वियतनाम तटवर्ती इलाकों में तेल और गैस के अन्वेषण का विरोध किया था। इतना ही नहीं वियतनाम द्वारा अपना विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र माने–जाने वाले क्षेत्र में कार्यरत जहाजों को कई बार चीनी जहाजों को रोका भी गया। उच्च –स्तरीय वार्ता के बाद जून मे चीन ने दक्षिण चीन सागर विवाद के समाधान और स्थिति को और बिगड़ने से रोकने के लिए वियतनाम के साथ समझौता किया।

चीन, अपतटीय विवाद निपटाने के लिए वियतनाम और फिलीपींस को अपनी शर्ते मनवाने की रणनीति अपना रहा है। इसके बाद वह दूसरे गंभीर दावेदारों–मलेशिया और ब्रुनेई तथा दक्षिण एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था इंडोनेशिया के साथ भी ऐसे ही समझौते करेगा। हालांकि दक्षिण चीन सागर में इंडोनेशिया का किसी द्वीप को लेकर विवाद नहीं है, फिर भी चीन का दावा विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र तक फैला है जो उत्तर में इंडोनेशिया के नतुना द्वीप तक जाता है। अपने आर्थिक और सामरिक हितों के कारण चीन, दक्षिण चीन सागर में अपना प्रभुत्व बनाना चाहता है। आर्थिक पहलू यह है कि चीन चाहता है कि हिंद और प्रशांत महासागरों में उसके जहाज निर्बाध रूप से तैयार माल बाजारों मे ले जा सकें और वहाँ से कच्चा माल ला सकें। सामरिक लिहाज से चीन जानता है कि अगर उसे एक विश्व शक्ति के रूप में उभरना है, तो उसे दुनिया को अपनी ताकत दिखानी होगी। उसे लगता है कि दक्षिण चीन सागर पर अपने नियंत्रण से वह अपने राष्ट्रीय हितों से जुड़े विश्व घटनाक्रम को प्रभावित कर सकेगा। उसे इस क्षेत्र पर अमेरिका और जापान जैसे प्रतिद्वंद्वी ताकतों के नियंत्रण से अपने लिए खतरा महसूस हो रहा है।

दक्षिण चीन सागर मे मौजूदा भारत–चीन टकराव काफी गहरा और व्यापक है और वह ऊर्जा संबंधी अपनी जरूरतों की रक्षा के उद्देश्य से भी परे जाता है। दरअसल, वियतनाम को केन्द्र बनाते हुए दक्षिण–पूर्व और पूर्व एशियाई देशों के साथ अपनी सामरिक साझेदारी मजबूत करके चीन के प्रभाव क्षेत्र में अपने मार्ग का विस्तार, भारत की सोची –समझी रणनीति का एक हिस्सा है। एक तरह से यह, भारत को चारों ओर से घेरने की चीन की **'स्ट्रिगं ऑफ पर्ल्स''**[8] रणनीति का नकारा बनाने का एक तरीका है।

अब भारत पहली बार चीन के दबाव में नहीं आया है। उसने कह दिया है कि वह उन दो ब्लॉकों में अपना काम जारी रखेगा, जिन्हें संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि के तहत वियतनाम अपने अधिकार क्षेत्र मे मानता है। विदेश मंत्रालय प्रवक्ता, विष्णु प्रकाश ने ऊर्जा क्षेत्र में वियतनाम के साथ सहयोग बढ़ाने के अपने इरादों को दोहराया है। **विष्णु प्रकाश** कहते हैं, ''वियतनाम में ओएनजीसी काफी समय से अपतटीय तेल और गैस अन्वेषण का काम कर रही है और वियतनाम इस सहयोग को और बढ़ाना चाहता है। एस्सार आयल लि. को भी वियतनाम में एक ब्लॉक दिया गया है।''उन्होंने कहा, ''वियतनाम या किसी अन्य देश के साथ हमारा सहयोग अंतर्राष्ट्रीय कानूनों, मापदंडों और संधियों के तहत होता है।'' उन्होंने भारत का रूख दोहराते हुए कहा, **''भारत, दक्षिण चीन सागर में नौवहन की स्वतंत्रता का समर्थन करता है और उसे उम्मीद है कि विवाद से जुड़े सभी पक्ष 2002 की दक्षिण चीन सागर घोषणा का पालन करेंगे।''**

भारत ने भी पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में चीनी परियोजनाओं पर आपत्ति उठाकर जवाब दिया है। भारत ने कब्जे वाले कश्मीर में खासतौर से दियामेर भाषा बांध और कराकोरम हाइवे को उन्नत बनाने की चीन की परियोजनाओं के बारे में चिंताएँ जताई है। चीन ने इस मुद्दे पर भारत की चिंताओ को खारिज करते हुए कहा है कि यह मुद्दा भारत और पाकिस्तान का हैं, जो उन्हें आपस में सुलझाना चाहिए। भारत और वियतनाम मे सैन्य सहयोग भी बढ़ रहा है और दक्षिण चीन सागर में चीन की आक्रामकता को देखते हुए वे सहयोग के अवसरों की तलाश कर रहें है। सैन्य सहयोग को बढ़ाने के लिए रक्षा **सचिव शशिकांत शर्मा** के नेतृत्व में हाल ही में एक दल हनोई गया था। दोनों देश, विशाखापतनम में नौसेना के पनडुब्बी स्कूल, आईएनएस सतवाहन में वियतनामी नाविकों को ट्रेनिंग देने की व्यवस्था की योजना बना रहे है। वियतनाम ने दक्षिण वियतनाम में न्हा त्रांग बंदरगाह मे भारतीय नौसैनिक जहाजों को स्थायी लंगर डालने की भी अनुमति दे दी है। इससे दक्षिण चीन सागर में भारतीय नौसेना को अपनी उपस्थिति मजबूत करने में मदद मिलेगी।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

भारत, हिन्द महासागर में चीन के बढ़ते हुए प्रभाव को लेकर चिन्तित है, चाहे वह ब्रह्मपुत्र के पानी को रोकना हो या पाकिस्तान के गिलगित इलाके पर संपर्क मार्ग बनाने का या फिर दक्षिण एशिया तक परिवहन संपर्क कायम करने का हो चीन खासतौर से भारतीय सीमा से लगे अपने इलाकों मे बुनियादी ढाँचे को उन्नत बना रहा है। किन्तु भारतीय नीति निर्माताओं के चीन के खतरे के बारे में व्याप्त सोच से हमारी सीमावर्ती आबादी सहमत नहीं है। उनका मानना है कि अगर भारत सरकार इस इलाके में सड़कों को विकसित करने के बारे में गंभीर है, तो इस काम में ग्लोबल टेंडर मंगवाने और खासतौर से अरूणाचल प्रदेश में उन्नत टेक्नोलॉजी के प्रयोग से तेजी लाई जा सकती है। दरअसल जब से रणनीति को खतरे के रूप में पहचाना, तब से उन्होने सीमा को 'अप्रासंगिक' बनाने की बात कहनी शुरू कर दी। इस प्रकार भारत के सीमावर्ती इलाकों में असुरक्षा की भावना ने भारत की नीतिगत सोच में सीमावर्ती इलाको के सामाजिक आर्थिक विकास पर ध्यान देने की प्रेरणा का काम करना शुरू कर दिया।[9]

मार्च, 2015 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हिन्द महासागर यात्रा काफी सार्थक रही है। उनके साहस की सराहना करनी होगी कि वे पहले प्रधानमंत्री है, जो राजीव गाँधी की 28 साल पहले हुई यात्रा के बाद श्रीलंका गए है। मोदी की इस हिन्द महासागरीय देशों की यात्रा को कई विशेषज्ञ सिर्फ चीनी चश्में से देख रहे है। उनका मानना है कि मोदी इन देशों में इसलिए गए है क्योंकि चीन ने भारत के कान खड़े कर दिए हैं। चीनी सरकार ने आजकल **''सामुद्रिक रेशम पथ का जो शोशा छोड़ा हुआ है, उससे कई विशेषज्ञ घबराए हुए है कि चीन बांग्लादेश, बर्मा, श्रीलंका, मालदीव, पाकिस्तान आदि सभी देशों के समुद्र तटो को अपने प्रभाव क्षेत्र में ले रहा है।**[10]

चीन का इस रणनीति को अपनाने का सबसे मुख्य कारण है, हिंद महासागर के जल–मार्गों पर अपना वर्चस्व कायम करना। इसमें शक नहीं हैं कि चीन हिंद महासागर में अपने प्रभाव का विस्तार कर रहा है, लेकिन उनका कहना है कि यह वह अमेरिकी प्रभाव को रोकने के लिए कर रहा है, लेकिन हम ये न भूले कि इस क्षेत्र का नाम हिंद महासागर है। सन् 1902 में **वाइसराय लार्ड कर्जन** के द्वारा इस क्षेत्र को **"भारत का क्षेत्र"** कहा गया था। यदि नरेन्द्र मोदी इस क्षेत्र मे भारत की प्रधानता स्थापित करना चाहते है तो इसमे गलत क्या है। इससे चीन या अमेरिका को चिढ़ने की जरूरत क्या है? मोदी ने तीनों देशों (सेशल्स, मॉरीशस, श्रीलंका) में दिये गये अपने भाषणों में कहीं भी किसी भी देश से प्रतिस्पर्द्धा की बात नहीं कही है। यह नीति अटल बिहारी वाजपेयी ने चलाई थी। वे इन देशों को **'भारत की माला'** कहते थे।[11]

इस यात्रा के दौरान तीनों देशों के साथ दर्जनभर समझौते हुए है। इस समझौते का लक्ष्य इन देशों के साथ भारत के संबंधों को घनिष्ठ बनाना है। हिंद महासागर से जुड़े हुए लगभग 40 देशों के साथ गहरे संबंध बनाने का संकल्प लेकर ही मोदी इन देशों में गए है। इस क्षेत्र में दुनिया का दो–तिहाई तेल और एक–तिहाई माल इधर से उधर जाता है। अतः भारत का यह दायित्व है कि इस क्षेत्र में पूर्ण शांति रहे व व्यापारिक मार्ग सभी के लिए खुले रहे और भारत के साथ मिलकर सभी देश उन्नति करे, इसलिए मॉरीशस के 'अगलेगा' और सेशल्स के 'एजम्पशन' टापुओं पर भारत के रणनीतिक ढांचे खड़े करने के लिए समझौते किए है। मॉरीशस और सेशेल्स के नागरिकों के लिए वीजा सुविधाएँ बढ़ायी है। श्रीलंका के साथ व्यापार, विनियोग और सीधा जन–संपर्क बढ़ाने का भी संकल्प है। इस यात्रा के दौरान भारत ने इतनी सर्तकता बरती गई है कि चीन अमेरिकी या किसी अन्य देश के नाराज होने की कोई गुजाइश नहीं है। यदि हिन्द महासागर मे हिंद का झण्डा फहराना है तो इसी सावधानी से काम लेना होगा।

विगत दो दशकों से चीन की भारतीय उपमहाद्वीप में उपस्थिति निरंतर बढ़ती जा रही है। चीन यह भली–भाँति जानता है कि अफ्रीका एवं पश्चिमी एशिया व मध्य एशिया के उर्जा संसाधनों के बल पर ही वह अपनी आर्थिक प्रगति सुनिश्चित कर सकता है। पश्चिमी एशिया में तेल की कूटनीति का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि अमरिकी प्रभुत्व वाले इलाके से तेल का बहाव निर्बाध रूप से चीन की तरफ होता रहे। इसलिए चीन खाड़ी देशों से बेहतर द्विपक्षीय संबंध बनाने पर ज्यादा ध्यान दे रहा है। चीन का 60 प्रतिशत से अधिक तेल फारस की खाड़ी के रास्ते से आता है। अफ्रीका में चीन भारी मात्रा में निवेश कर रहा है। वर्तमान में दोनों का व्यापार 30 बिलियन डॉलर से अधिक का है। चीन को अपने विकास के लिए तेल, गैस, टिंबर, अयस्क जैसे संसाधनों की आवश्यकता है और अफ्रीका के प्राकृतिक भंडारों पर चीन की नजर टिकी हुई है। पश्चिमी एशिया एवं अफ्रीका में अपने हितों की पूर्ति के लिए जरूरी है कि चीन का हिंद महासागर से बिना किसी रोकटोक आवागमन होता रहें। मलक्का की खाड़ी और हिन्द महासागर से चीन का अधिकांश व्यापार होता है।

चीन की योजना पाकिस्तान के साथ मिलकर ईरान तथा दक्षिण अफ्रीका से क्रूड ऑयल आयात करने के साथ ही अपने तेल शिपमेंट को आयात स्थिति के लिए बचाने की है। ग्वादर सी पोर्ट स्टेट ऑफ हार्मुज जलडमरू के पास है और यहाँ से विश्व का 40 प्रतिशत तेल पास होता है। अफ्रीका के साथ व्यापारिक संबंधों को बनाए रखने के लिए सबसे सुलभ एवं आसान मार्ग पाकिस्तान ही प्रदान कर सकता है।

समुद्री क्षेत्र में दखल के उद्देश्य से चीन ने श्रीलंका के **हब्बन टोटो** को सी हार्बर के रूप में विकसित करने के लिए श्रीलंका से 2007 में समझौता किया। श्रीलंका के दक्षिण के तट पर स्थित हब्बन टोटा में 18 अरब डॉलर की सहायता से बन रही यह परियोजना 15 वर्षों में पूरी होगी। चीन

श्रीलंका को आर्थिक, कूटनीतिक एवं सामरिक सहायता देकर अपना मकसद पूरा करना चाहता है। वर्षो से चले आ रहे श्रीलंका सरकार और लिट्टे के संघर्ष में लिटटें के दमन में चीन ने श्रीलंका सरकार की पूरी सहायता प्रदान की।

चीन को हिंद महासागर तक पहुँचाने में म्यांमार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। चीन ने **सितवे नामक** स्थान पर सी हार्बर बना रखा है। कोको द्वीप व अन्य द्वीपों को म्यांमार से पट्टे पर लेकर वहाँ शक्तिशााली संचार व खुफिया तंत्र विकसित कर रखा हैं। बंगाल की खाड़ी में स्थित यह कोकोद्वीप भारत के केद्रंशासित प्रदेश अंडमार निकोबार द्वीप समूह से केवल 18 किमी. की दूरी पर स्थित है। इस द्वीप से भारतीय नौ सैनिक गतिविधियाँ पूर्वी नौ सैनिक कमान, बंगाल की खाडी और उडीसा के चांदीपुर स्थित मिसाइल टेस्टिंग रेंज पर चीन की ओर से जासूसी करने की पुष्टि हो चुकी है। कोको द्वीप के अलावा मानओंग, हांझी, जादेत्की और संगथित द्वीप पर चीन ने शक्तिशाली रडार एवं इलेक्ट्रोनिक्स एंटीना एवं संचार का केन्द्र बना रखा हैं म्यांमार का **पैगोडा प्वाइंट** चीन का महत्वपूर्ण सप्लाई केंद्र बन चुका है। पिछले दो दशकों से चीन ने म्यामांर को मजबूत सैनिक आर्थिक, राजनीतिक गठबंधन में जकड रखा है।[12]

चीन हिंद महासागर में अपना प्रभुत्व बढ़ाने के लिए नौसेना में वृद्धि करता जा रहा है, साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप से लगे राष्ट्रों को अपने नियंत्रण में लेता जा रहा है। चीन की नौसेना जो कभी तीनों सेनाओं में सबसे कमजोर मानी जाती थी आज चीनी नौसेना अमरीका व रूस के बाद दुनिया की तीसरी नंबर का सर्वश्रेष्ठ सेना बताई जा रही है। चीन पनडुब्बियों के बेड़े बैलिस्टिक मिसाइलों तथा जी.पी.एस. ब्लाकिंग जैसी आधुनिक प्रणाली से लैस है। इस दशक के अंत तक वह विमान वाहक पोत बनाने में सक्षम होगा, क्योंकि चीन इसे समुद्री हितों की रक्षा हेतु अपरिहार्य समझता है। चीनी नौसेना गुणवत्ता और संख्या दोनों ही दृष्टि से भारतीय सेना से श्रेष्ठ है। चीन चाहता है कि हिंद महासागर में उसका व्यापार निर्बाध रूप से होता रहे। इन जलमार्गों में भारतीय नौसेना की उपस्थिति का सामना करने के लिए पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, मालदीव एवं म्यांमार में अपने अड्डे बनाकर एवं अपनी नौसेना में वृद्धि करके भारत के समुद्र मार्ग से भी घेराबंदी कर चुका है।[13]

Conclusion- यह कहा जा सकता है कि भारत को चीन के साथ इस रणनीतिक विचार के साथ रहने की ओर दोनों देशों के साथ संबंधों को विकसित करने की जरूरत है। इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि भारत को पाकिस्तान को अलग करने कि बजाय तालमेल बिठाने की जरूरत है। यह भी कि चीन द्वारा पाकिस्तान पर विश्वास निर्माण के उपायों **(सीबीएम)** के लिए नियंत्रण रेखा **(एलओसी)** के साथ चीनी भारतीय सीबीएम के साथ, एलएसी के साथ और एलओसी के विचार को बदलकर पाकिस्तान व अन्य शक्तियों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा में परिवर्तित करने की संभावना तलाश करें, इसके लिए दबाव की जरूरत है। इसके साथ ही भारत को पाकिस्तान को हरेक क्षेत्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर सीधे–सीधे उपेक्षित करना चाहिए क्योंकि पाकिस्तान भारत को अपने स्तर पर गिराने का प्रयास करता है। जिससे अप्रत्यक्ष रूप से चीनी उद्देश्य निहित है।

संदर्भ सूची

1. जॉनसन. कीथ, ''व्हाट काइंट ऑफ गेम इज चाइना प्लेइंग,'' डब्ल्यू एस. जी. 11 जून 2011
2. किसिंगर. हेनरी, ''ऑन चाईना, पेग्विंन बुक्स लिमिटेड,'' यू.एस.ए. पृ. 22
3. माधव. राम, ''असहज पड़ोसी'', प्रभात पेपर वैक्स, नई दिल्ली 2015 पृ. 173
4. माधव. राम, उपर्युक्त, पृ.– 174
5. चाइना बिल्डस स्ट्रैटेनिक सी लाइंस वाशिंगटन टाइम्स,17 जनवरी, 2005
6. द हिन्दू – 25 जुलाई 2017
7. वर्ल्ड फोक्स, जुलाई, 2013
8. बी. आर. दीपक, ''इण्डिया एण्ड चाइना, 1909–2004'' मानक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2005 पृ. 188–194
9. साली एल. एल, ''इण्डिया चाईना बॉर्डर डिस्पुट'', ए. पी. एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली, 1998 पृ 56
10. साली.एल. एल, उपर्युक्त, पृ 57–58
11. खन्ना. वी. एन, ''भारत की विदेश नीति विकास'' पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., नई दिल्ली, 203 पृ. 149
12 खन्ना. वी. एन, उपर्युक्त, पृ. 149–150
13. खन्ना. वी.एन. एवं अरोड़ा लिपाक्षी, ''भारत उसके पडौसी तथा यू. एस. ए.'' सिविल सर्विसेज टाईम्स, नई दिल्ली, सितम्बर,2009 पृ. 33

RRIJM 2015, All Rights Reserved